बच्चे खुशी से सीख रहे हों तो सब जायज है

राजकीय प्राथमिक विद्यालय उडरी, डुण्डा

– मनोरमा व रविज्योति

डुण्डा स्कूल का 'प्राथमिक विद्यालय उडरी' उत्तरकाशी की सुंदर वादियों में स्थित है। सड़क से विद्यालय की दूरी लगभग 4 किलोमीटर है जिसे पैदल ही तय करना पड़ता है। उडरी गाँव में पहुँचकर पता चलता है कि वह बहुत बड़ा गाँव है। वहाँ बहुत से परिवार रहते हैं। लोगों की संख्या ज्यादा होने की वजह से यहाँ 2 आँगनवाड़ी केन्द्र स्थापित किये गये हैं।

विद्यालय पहुँचते ही यहाँ की प्राकृतिक छटा मन को विभोर कर देती है। कुछ साल पहले तक विद्यालय का आधारभूत ढाँचा आज की अपेक्षा बेहतर स्थिति में था, प्राकृतिक आपदाओं के कारण विद्यालय का कुछ हिस्सा पूरी तरह नष्ट हो गया है। वर्तमान समय में विद्यालय में केवल दो कमरे हैं, जिनको व्यवस्थित करके उन्हीं में सभी कक्षाएँ चलायी जाती हैं। विद्यालय में स्थित एक अस्थायी कमरे को भोजनालय के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, जिससे मध्यान् भोजन व्यवस्था में अध्यापकों व छात्रों को काफी संघर्ष करना पड़ता है।

सभी विद्यार्थी विद्यालय में साफ़–सुथरे कपड़े पहनकर व अच्छे से तैयार होकर आते हैं। अपने जूतों को व्यवस्थित क्रम में रखते हैं। यहाँ के सभी छात्र स्वानुशासन में रहते हैं।

विद्यालय में तीन अध्यापक है जिसमें हेड मास्टर प्रशासनिक कार्यों को देखते हैं तथा राजेश जोशी व सेमवाल जी शिक्षण कार्य को संभालते हैं। दोनों अध्यापक अपने शिक्षण कार्य में निपुण हैं तथा उनकी विद्यालय में रोजाना उपस्थिति इस बात का प्रमाण है। शिक्षकगण कक्षा में शिक्षण कार्य के लिए नयी–नयी विधियों का इस्तेमाल करते रहते हैं।

विद्यालय में बच्चों का शैक्षणिक स्तर बहुत ही अच्छा है। कक्षा 1 एवं 2 के सभी बच्चे को वर्णों व ध्वनि की पहचान है। वह कहानी को हाव–भाव के साथ बोलते हैं। कक्षा तीन के बच्चों को संख्याओं की पहचान है साथ ही वे सरल वाक्यों को आसानी से बना लेते हैं। कक्षा 4 एवं 5 के बच्चों का शैक्षणिक स्तर काफी विकसित है वह वाक्यों को लिखना व संख्यात्मक प्रश्नों को आसानी से हल कर पाते हैं। अध्यापक कक्षा–1 व 2 के बच्चों पर अधिक ध्यान देते हैं, जिससे बच्चों का आधार मजबूत रहे।

विद्यालय में बच्चों के स्तर को देखकर, यह विचार मन में तुरंत आता है कि अध्यापक कक्षा में बच्चों के साथ कुछ तो अलग प्रक्रिया से कार्य कर रहे हैं। जिसे देखना हमारे लिए एक सुखद एहसास जैसा था। हमने इसका एक विडियो भी प्रकाशित किया है। कक्षा 1 और 2 के बच्चों का ध्यान केन्द्रित करते हुए भाषा के बुनियादी ज्ञान को विकसित करने में अध्यापकों का बहुत अच्छा प्रयास देखने को मिला। साथ ही कक्षा 4 व 5 के बच्चे एक साथ बैठते हैं जिन्हें अपने–अपने स्तर के अनुसार वर्ग समूह में बाँटा गया है। बच्चों में अदभुत तरीके का आत्मविश्वास नजर आता है। बच्चों को उनके प्रदर्शन के आधार पर सम्मानित किया जाता है। इस कारण से बच्चे काफी उत्साहित रहते हैं और बेहतर प्रदर्शन करने का प्रयास करते हैं।

बच्चों के द्वारा अच्छा काम किए जाने पर अध्यापकों द्वारा उन्हें स्टार दिया जाता है। जिससे बच्चे कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं। शैक्षिक सत्र के अन्त में बच्चों के स्टार को गिना जाता है। जिनका स्टार सबसे ज्यादा होता है उन्हें पुरस्कार दिया जाता है। पुरस्कार राशि शिक्षक स्वयं एकत्र करते हैं। पिछले

सत्र में प्रथम आने वाले बच्चों को विद्यालय की तरफ से पढ़ने के लिए कुर्सी व मेज दी गई थी। इनमें पाठ्यक्रम के अलावा विद्यालय की अन्य गतिविधियों व खेलकूद को भी शामिल किया जाता है।

विद्यालय तथा समुदाय के बीच सम्बन्ध बहुत ही अच्छे हैं। सभी गाँव वाले अध्यापक का बहुत सम्मान करते हैं। विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों के अभिभावकों के साथ तो अध्यापकों के सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ एवं आत्मीय स्तर का है। जोशी जी आवश्यक दवाइयों को विद्यालय में रखते हैं जिससे बच्चों के साथ ग्रामीण भी लाभन्वित होते हैं।

विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने में गाँव के सदस्य एवं अभिभावक काफी सहयोग करते हैं तथा समय–समय पर विद्यालय आते रहते हैं। इससे विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति निरंतर बनी रहती है।

विद्यालय में उपस्थिति बढ़ाने और इसे सुसंयत तरीके से आगे बढ़ाने में श्री राजेश जोशी जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके लिए पहली पीढ़ी के बच्चों को स्कूल लाना और उन्हें स्कूल से जोड़े रखना आसान नहीं था। कई बार निराशा उन्हें घेरती लेकिन जल्दी ही बच्चों की मुस्कुराहटें उन्हें निराशा से बाहर खींच लेती। राजेश को बच्चों का नहीं, समुदाय का भी भरपूर प्यार, सहयोग मिला। गुरुजी पर सबको बेहद स्नेह है। कोई प्यार से उनके लिए मट्ठा लेकर आता कोई खास तरह की चटनी बनाकर लाता। शिक्षक बच्चों के साथ ही बैठकर खाना खाते हैं। वो बच्चों के सबसे अच्छे दोस्त हैं। एक दिन भी वो विद्यालय न आएं तो बच्चे परेशान हो जाते हैं और शिक्षक का भी अपने बच्चों के बिना मन नहीं लगता है।

राजेश की पत्नी मंजू बताती है – ''वह कहीं बाहर काम से जाते हैं तो भी कभी कोई खिलौना, कोई मिठाई स्कूल के बच्चों के लिए जरूर खरीदते हैं। कई बार मैं उनसे कहती हूँ कि तुम तो अपने बच्चों से भी ज्यादा स्कूल के बच्चों को प्यार करते हो, तो वह हंसकर जवाब देते हैं कि मेरे दो बच्चों श्रेयस और वेदांत के पास तो तुम हो ख्याल रखने को, लेकिन उन बच्चों के पास तो मैं ही हूँ। वे तो कभी उड़ने वाले जहाज, स्पाइडरमैन या रोबोट जैसे खिलौने नहीं देख पायेंगे।''

राजेश कहते हैं कि शिक्षक बच्चों को सिर्फ सिखाने के लिए नहीं होता बल्कि सीखने के लिए भी होता है। बच्चों के खजाने में बहुत सारी जानकारियां होती हैं। वो हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। राजेश ने बच्चों को चिट्ठी और डायरी लिखना सिखाया है। वो कहते हैं चिट्ठी और डायरी लिखने के चलते मैंने समझा कि बच्चों की वो हिचक टूटती है। वो बेहिचक होकर गलतियां करते हैं। गलती को माफ करना तो अलग बात है मैं अपने बच्चों को गलती करने की भी आजादी देता हूं।

उनके के पास हमेशा कुछ टॉफियां, कुछ स्टिकर, कुछ खिलौने होते हैं। वो बच्चों की कॉपियों में सुंदर स्टिकर लगाकर उन्हें शाबासी देते हैं। टॉफियाँ उनके टॉस्क का ईनाम होती हैं। साथ ही वो इस बात का भी ख्याल रखते हैं कि यह सब बच्चों का उत्साह तो बढ़े लेकिन उनमें प्रतिस्पर्धा न पनपे। उन्होंने इस बात की शिकायत नहीं की कि बच्चे घर से पढ़कर नहीं आते। वो जानते हैं कि जिन हालात से बच्चे निकलकर आ रहे हैं, उनमें उनका स्कूल तक आना ही बहुत है। वो बच्चों को अपने घर के हालात बदलने के लिए तैयार करते हैं। वो कहते हैं कि 'मैं बच्चों को इतना सक्षम बनाना चाहता हूं कि वे अपने घर का माहौल खुद

बदल सकें। शिक्षकों ने स्कूल में तीन हाउस बना रखे हैं। हरा, केसरिया और सफेद। हर हाउस के बच्चे अपने हाउस के रंग के रिबन लगाते हैं। लड़कियाँ बालों में लगाती हैं तो लड़के हाथ में बाँधते हैं। जब सारे हाउस इकट्ठे होते हैं तो बहुत सुंदर नजारा होता है। एक हाउस दूसरे हाउस के बारे में जानकारी इकट्ठा करता है। बच्चे ही दूसरे बच्चों का काम देखते हैं। एक बच्चा अग्रणी भूमिका में आता है यह देखने को सारे हाउस ठीक से काम कर रहे हैं या नहीं। जिम्मेदारियों का ठीक से बँटवारा और उन्हें पूरा करने की होड़ बच्चों को अपने कामों के प्रति उत्तरदायित्व से भरती है। कूदने वाली रस्सी, बैडमिंटन, फुटबॉल, शतरंज, लूडो जैसे खिलौने राजेश ने स्कूल में जमा किये हैं। स्पोर्ट्स क्लब बना रखा है। बच्चे खुद इसकी जिम्मेदारी लेते हैं।

उन्होंने स्कूल में बच्चों की बाल सरकार भी बनायी है। इस सरकार में प्रधानमंत्री से लेकर, स्वास्थ्य मंत्री, सांस्कृतिक मंत्री, व्यवस्था मंत्री, तक सब होते हैं। प्रधानमंत्री स्कूल की सारी गतिविधियों पर नजर रखता है। स्वास्थ्य मंत्री बच्चों के नाखून कटे हैं कि नहीं, ड्रेस साफ है या नहीं, बाल ठीक से बने हैं कि नहीं, बच्चे नहा के आये कि नहीं इन बातों का ध्यान रखता है। सांस्कृतिक मंत्री प्रार्थना सभा का ध्यान रखता है। इसके अलावा भोजन मंत्र, गीत वगैरह करवाना भी उसका काम है। व्यवस्था मंत्री बच्चों के छूटे हुए सामान, खोए हुए सामान को देखता है। स्कूल में एक रैपिड एक्शन फोर्स भी है जो दरी बिछाना, दरी उठाना, फटे हुए कागज को, फैले हुए सामान को व्यवस्थित करता है। किसी भी बच्चे को कोई दिक्कत होती है तो रैपिड एक्शन फोर्स उसकी मदद करता है। धीरे–धीरे स्कूल के हर काम की जिम्मेदारी बच्चों ने ले ली है। राजेश बच्चों के दोस्त बन चुके हैं। वो दूर से सारे कामों को होते हुए देखते हैं और मुस्कुराते हैं। राजेश कहते हैं कि शिक्षक बच्चों को सिर्फ सिखाने के लिए नहीं होता बल्कि सीखने के लिए भी होता है। बच्चों के खजाने में बहुत सारी जानकारियां होती हैं। वो हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। राजेश ने बच्चों को चिट्ठी और डायरी लिखना सिखाया है। वो कहते हैं चिट्ठी और डायरी लिखने के चलते मैंने समझा कि बच्चों की वो हिचक टूटती है। वो बेहिचक होकर गलतियां करते हैं। गलती को माफ करना तो अलग बात है मैं अपने बच्चों को गलती करने की भी आजादी देता हूं।

बल्कि उन्हें उत्साहित करता हूँ कि गलती करो इससे उनके मन से गलत हो जाने का, गलत बोल जाने का भय जाता रहता है। उसी के बाद सही की शुरुआत होती है। 'बच्चों के साथ इस प्यार भरे सफर की शुरुआत राजेश के लिए बहुत आसान नहीं था। बहुत आलोचनाएँ सुननी पड़ती थीं। 'ये दुनिया बदलने आए हैं। ''अब तो सब बदलकर ही मानेंगे जैसे ताने सुनने पड़ते थे।' घर पर भी सवाल होते थे कि सारी दुनिया को बदलने का ठेका क्या तुमने ही ले रखा है? और मैं यही जवाब देता हूँ कि मैंने कब कहा कि मैं दुनिया बदलने आया हूँ। यह दुनिया तो पहले से ही खूबसूरत है। मैं तो खुद इस दुनिया से अपने लिए कुछ खुशियों के पल, कुछ सुकून लेने आया हूँ। इसी अच्छा लगने को जीने के लिए राजेश उठकर चल देते हैं। थोड़ी ही देर में उनके क्लास से बच्चों की सामूहिक आवाज राजेश गुरूजी की कविताओं में डूबने–उतराने लगती है। वो कविताएँ जिन्हें राजेश ने कक्षा में बच्चों के साथ मिलकर लिखा है...

चाचा चाचा रामभरोसे, मुझे खिलाओ गरम समोसे
ठंडी चाय नहीं पियूँगा, न खाऊँगा इडली डोसे...